

स्थविमन् (von स्थ) n. *das dicke Theil, die Breite*: स्थ<sup>०</sup>, मध्य, अणि-  
मन् ÇAT. Br. 3, 8, 2, 18. ०मर्तुम् *an der breiten Seite* TS. 6, 3, 9, 2. TBa.  
3, 3, 22, 2. अवयति ÇAT. Br. 6, 4, 2, 1. KĀṬH. 31, 12. m.: ययाकार्यं स्थवि-  
मा KĀṬH. Ça. 6, 1, 35.

स्थविर् (wie eben) UṆĀDIS. 1, 54 (oxyl.). 1) adj. (f. स्था und ई in der älteren  
Sprache, in der späteren nur स्था). a) *breit, dick, derb, massig*: Stier RV.  
4, 18, 10. AV. 9, 4, 3. Rosse RV. 7, 24, 4, 67, 4. (इन्द्रस्य) उग्रस्य पूनः स्थ-  
विर्स्य 3, 46, 1. 1, 171, 5. 10, 103, 5. Viṣṇu 7, 100, 3. MBu. 13, 6955.  
Hariv. 14119. Kühe so v. a. Milch RV. 9, 86, 4. penis TBa. 2, 4, 22, 7. *dicht*:  
व्रज (so zu lesen st. वज्र) RV. 4, 20, 6. उत्सव 10, 51, 1. übertr.: वाज 6, 1, 11.  
18, 12. 32, 1. 37, 5. 7, 93, 2. वृष्य 1, 54, 8. गिर 181, 7. तेजस्य ÇĀṆKH. GṆJ.  
2, 2. — b) (vollwüchsig), *alt* (AK. 2, 6, 2, 42. H. 339. HAIJ. 2, 348), (wie  
πρεσβύτερος) *angesehen, gravis* TBa. 3, 10, 22, 3. Nir. 6, 30. ĀṬV. Ça. 10,  
7, 2. ÇAT. Br. 2, 2, 20. 7, 2, 15. 13, 4, 2, 6. KĀṬH. 11, 2. Gâtukarṇja  
ÇĀṆKH. Ba. 26, 5. Gotama LĀṬJ. 2, 9, 30. Çākalja RV. Prāt. 2, 44.  
Kaunḍinja TS. Prāt. 17, 4. रोमकायणा Bṛhadd. in Ind. St. 1, 105. —  
ÇĀṆKH. GṆJ. 2, 14. 3, 4. उर्ध्वं प्राणा कृतक्रामति पूनः स्थविर् अयापति M.  
2, 120. 8, 70. 163. 394. JĀṬN. 2, 150. P. 4, 1, 165 (०त्). MBu. 1, 1971. 2, 1343.  
1996. 2279. 3, 2184. युवस्थविर्बाला: 2522. 10630. 5, 125, 13, 17. 1516. Ha-  
riv. 5004. R. 5, 31, 17. Suçr. 2, 142, 17. Raçh. 19, 57. Spr. (II) 3275. 4919. 7453.  
Varāh. Bṛh. S. 5, 41. Kathās. 16, 11. 25, 14. 113, 24. Daçak. 93, 6. Bṛāg.  
P. 1, 11, 24. 9, 7, 18. 12, 3, 42. Baum MBu. 13, 281. स्थविर्वायुम् *ein hohes*  
*Alter erreichend* Hariv. 3021. स्थविरे (v. l. स्थाविरे) काले Spr. (II) 4067,  
v. l. Bei den Buddhisten Bez. der ältesten, ehrwürdigsten Bhikshu  
(vgl. UḡēVAL.), die dem Çākjamuni am nächsten stehen, Burnour,  
Intr. 288. 297. 365. Hiouen-thsang 1, 158. 177. 430. 2, 311. 3, 36. Was-  
siljew 38 u. s. w. TĀRAN. 4 u. s. w. — c) = अवल UṆĀDIS. im ÇKDn.  
fehlerhaft für स्थावर. — 2) m. ein N. Brahman's H. 211. — 3) f. स्था  
*eine best. Pflanze*, = मकाम्बावणी RĪĀAN. im ÇKDn. — 4) n. Erdharz  
(das auch पलित heißt) RĪĀAN. 12, 141. — Vgl. स्थाविर्.

स्थविष्ठ superl. zu स्थू, स्थूल *dick, grob, dicht* P. 6, 4, 156. Vop. 7, 56. AK.  
3, 2, 61. स्थ<sup>०</sup>, मध्यम, अणिष्ठ TS. 2, 5, 5, 2. KĀṬH. 25, 7. (रेतः) मध्यं स्त्रियै  
प्राप्य स्थविष्ठं भवति Ait. Br. 6, 9. ÇĀṆKH. Br. 28, 9. ÇAT. Br. 8, 2, 4, 19.  
KĀṬH. Ça. 15, 3, 42. धातु KĀṆD. Up. 6, 5, 1. fgg. MAITRUP. 2, 6. तनू 6, 6.  
(नारायणम्) अणीयसामणीयांसं स्थविष्ठं च स्थवीयसाम् MBu. 12, 1612.  
13, 6955. Hariv. 14119. Bṛāg. P. 2, 1, 24. 38. 4, 9, 13. 5, 26, 38. 11, 12, 17.  
12, 2, 22. 9, 11. PĀṆĀR. 4, 8, 67.

स्थवीयम् compar. zu स्थू, स्थूल *dick, grob, dicht* P. 6, 4, 156. Vop. 7, 56.  
ÇAT. Br. 5, 3, 9, 7. Ait. Br. 1, 21. PĀṆĀV. Br. 16, 2, 6. Shaṇv. Br. 3, 3.  
LĀṬJ. 1, 10, 1. MBu. 12, 1612. 13, 1376. Bṛāg. P. 2, 1, 24. 2, 14. 4, 24, 39.  
PĀṆĀR. 4, 8, 67.

स्थशस् (von स्थ) adv. *je nach der Stelle*: स्थशो जन्मानि सविता व्या-  
कः RV. 2, 38, 8.

1. स्था, तिष्ठति Dhātup. 22, 30 (गतिनिवृत्तौ). P. 7, 3, 78. Vop. 8, 70.  
तस्थौ, तस्थिर्वसु; अस्थात् P. 2, 4, 77. Vop. 8, 25. स्थात्, स्थाति, स्थसुम्, स्थुम्,  
स्थेषम्, स्थेषुम् AV. 16, 4, 7. स्थास्यति; स्थ्यात् P. 6, 4, 67. Vop. 8, 85. स्थे-  
याम; med.: तिष्ठे, तिष्ठमान; तस्थानै; अस्थित P. 1, 2, 17. Vop. 10, 11.  
अस्थिरन्; अस्थिषत ÇAT. Br. 3, 7, 9, 9, 2, 2. absol. स्थायम् Bṛāṭṭ. 5, 51.

pass. स्थीयते P. 6, 4, 66. partic. स्थित s. bes. Ueber den Uebergang von स्थ  
in ष्ठ s. AV. Prāt. 2, 92. fg. 1) *stehen, stillstehen, stehen bleiben, daste-  
hen*: न मेथेते न तस्थतुः RV. 4, 113, 3. 10, 10, 8. पदूधंस्तिष्ठाः (अग्ने) 3, 8,  
1. 5, 1, 2. अस्थ्युक् चित्रा उपसं: पुरस्तात् 4, 51, 2. आशूपावृतीरापौ अर्वाग-  
तिष्ठन् 5, 45, 10. 47, 5. नोचीनाः स्थुः 1, 24, 7. तिष्ठद्गोमः AV. 6, 44, 1. 77,  
1. 9, 1, 24. यदेतंति पतंति पञ्च तिष्ठति 10, 8, 11. अद्यापि तिष्ठते so v. a.  
*im Stall stehend* 3, 15, 8. तिष्ठन्वीर्यवत्तरः ÇAT. Br. 6, 7, 2, 1. 12, 2, 4, 8.  
TS. 5, 1, 9, 6. पूर्वा संध्यां जपंतिष्ठेत् — पश्चिमां तु समासीनः M. 2, 101.  
fgg. 192. 195. fgg. प्रपदे: 6, 22. तिष्ठ त्वं स्थावर इव MBu. 3, 2613. शैली  
स्थास्यति R. 1, 64, 12. अत्राहं स्थास्ये स्थाणुरिवाचलः MĀR. P. 15, 57.  
तिष्ठतु सर्वदशाश्च गङ्गामन्वाश्रिता नदीम् R. 2, 84, 7. तस्थतुः समस्तः ख-  
रम् 3, 29, 31. चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् Spr. (II) 2264. प्र-  
विश गेहं मा बहिस्तिष्ठ 2468. अग्ने स्थिता PĀṆĀT. 72, 6. एषा मदीया  
कन्यका तिष्ठति 189, 25. Hir. 22, 8. निमेषमात्रमपि किं वयो गच्छन् ति-  
ष्ठति Spr. (II) 3732. कृतात्तस्येव तिष्ठतः so v. a. *vor Einem stehend* R.  
2, 21, 9. *stehen bleiben, Halt machen* M. 11, 111. MBu. 1, 2167 (med.); ख  
st. स mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2, 82, 96. R. Gorr. 1, 9, 10. Kathās.  
4, 12. वसिष्ठस्याप्रतः स्थिता R. 1, 54, 7. ÇĀK. 12, 7. 13. 41, 8. 57, 3. 70,  
11. ज्ञानुभ्यां स्थिता *sich auf die Knie stellend* Vikr. 63, 6. mit loc. *ste-  
hen auf, in an*: रथेषु RV. 5, 53, 2. MBu. 5, 7218. अत्रारंते RV. 5, 85, 5.  
10, 72, 6. अष्टरेषु 6, 63, 4. VS. 2, 8. पृथिव्याम् AV. 9, 3, 17. 12, 1, 27. MBu.  
3, 2205. द्वारि 2265. R. 7, 68, 3 (med.). नौकासु R. Schul. 1, 9, 7. गङ्गानूपे  
ऽत्र तिष्ठत 2, 84, 6. तिष्ठत्येकतणामधिपतिर्व्योतिषां व्योममध्ये stillstehen  
Vikr. 20. तस्य संदर्शने तस्युः *stellten sich so, dass er sie sehen konnte*,  
R. 1, 9, 13. 5, 23, 32. अग्ने mit gen. so v. a. *vor Jmds Augen treten* Raçh.  
2, 56. — 2) mit acc. *stehen —, sich stellen auf, besteigen*: रथम् RV. 6,  
18, 9. हरी (wobei ebenfalls der Wagen verstanden ist) 1, 174, 4. *sich*  
*begeben nach*: तस्थतुः प्राचीं दिशम् R. 3, 77, 2. — 3) *vor dem Feinde*  
*stehen, Jmd (gen.) Stand halten* MBu. 3, 1973 (med.). 7, 682. Hariv. 5861.  
11031 (S. 790. med.). 11472. R. 1, 22, 19. 3, 27, 18. 4, 9, 73. 5, 22, 20. 47,  
18. 71, 9. ÇĀK. 94, 1. Spr. (II) 4428. 4710. Varāh. Bṛh. S. 43, 2. MĀR.  
P. 85, 72. fg. स्थायिष्यते येन रणे Bṛāṭṭ. 1, 22. नास्य शक्तः पुरः स्थातुं  
कृतात्तस्य यथा जनाः Bṛāg. P. 8, 15, 29. — 4) *trew ausharren — zur*  
*Seite stehen*: उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिते शत्रुसंकरे । राजद्वारे श्मशाने च  
यस्तिष्ठति स बान्धवः Spr. (II) 1221. तिष्ठते किं मुकुटं न बन्धुस्तत्र  
तिष्ठति 2879. 3254. नामुत्र किं सकायाय पिता माता च तिष्ठतः । न  
पुत्रद्वारं न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलः ॥ 3607. न स्त्रियस्तिष्ठति भर्तुषु  
3357. 5223. मर्यादायाममर्यादाः स्त्रियस्तिष्ठति भर्तुषु 258. — 5) *bei Etwas*  
(loc.) *verharren, nicht abgehen von*; med.: यत्रः पिता संजानीते तस्मिं-  
स्तिष्ठामहे Ait. Br. 7, 18. — 6) *sich zu Jmd (dat.) halten, sich für Jmd*  
*erklären*: एका किं रुद्रो न द्वितीयाय तस्युः so v. a. *einen zweiten erkennt*  
*man nicht an* ÇVETĀÇV. Up. 3, 2. med. P. 1, 3, 23. 4, 34. Vop. 5, 15. तुभ्यं  
तिष्ठामहे वयम् Bṛāṭṭ. 8, 12. अर्काय पत्ये खलु तिष्ठमानाः (अम्बुजिन्यः)  
Naiṣh. 7, 57. Vop. 23, 8. तिष्ठते (= स्वहृदयं व्यनक्ति) रण्डा विकर्मस्थे-  
भ्यः Sāṁkṣiptas. im ÇKDn. unter रण्डा. act. in Verbindung mit अग्नि  
Vop. 5, 7. — 7) *bestehen* (Gegens. vergehen, zu Grunde gehen): मुन्यिस्ते  
मा स्थात् TS. 4, 1, 2, 2. येनैष भूतिस्तिष्ठते क्षत्ररात्मा Muṇḍ. Up. 2, 1, 9.  
यावदेकानुदिष्टस्य गन्धो लेपश्च तिष्ठति M. 4, 111. यानुपाश्रित्य तिष्ठति